संगम

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रोपड़ की हिंदी त्रैमासिक पत्रिका

अक्तूबर–दिसंबर 2019

मुद्रण संस्करण 01 अंक 03

निदेशक का संदेश

प्रिय मित्रों,

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रोपड़ की हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका "संगम" के षष्ठम तथा मुद्रण संस्करण के तीसरे अंक को आप सभी पाठकों को समर्पित करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। संगम पत्रिका के माध्यम से हम अपनी तमाम शैक्षणिक, अनुसंधानपरक तथा सामाजिक –सांस्कृतिक गतिविधियों को आप तक पहुचाने का प्रयास करते आ रहे है।

वर्ष 2019 अपनी समाप्ति पर है और यह वह समय है जब हमें विगत वर्ष में हमारी उपलब्धियों के अवलोकन पर दृष्टिक्षेप डालने की आवश्यकता है। इस वर्ष हमने हमारे नए संस्थान में संस्थान के गुरुत्वाकर्षण केन्द्र के स्थानांतरण द्वारा संसाधन–सृजन में एक पड़ाव पार किया है। इस वर्ष हमने 2000 छात्र क्षमता के साथ हमारी शैक्षिक गतिविधियों में हुई वृद्धि को भी देखा है। हांलाकि, अनुसंधान उद्धरण में उत्कृष्ट प्राप्तांक के साथ टाईम्स हायर एज्युकेशन रैकिंग द्वारा देश के अग्रणी दो संस्थानों में एक संस्थान के रुप में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान को स्थान प्राप्त होना हमारे संस्थान के हर एक सदस्य के लिए सुखद एवं संतोषजनक अनुभूति है। इसी वर्ष ने संस्थान परिसर में आयी बाढ़ जैसी स्मरणीय चुनौतियों को भी देखा और इन चुनौतियों का साहस एक दृढनिश्चय के साथ सामना करते हुए निर्माण के प्रथम चरण को पूर्णता की ओर अग्रसर किया। परिसर में आयी बाढ़ रुपी आपदा के समय भा.प्रौ.सं.रोपड़ के प्रत्येक विद्यार्थी, संकाय सदस्य और कर्मचारिगणों ने संस्थान के प्रति प्रतिबद्धता का परिचय देते हुए रिकार्ड समय में संस्थान के सभी कार्यक्रमों को पुनःस्थापित किया।

विगत कुछ महिनों के दौरान, हमने कई महत्वपूर्ण आयोजन किए जिसमें विशेष रुप से श्री गुरु नानक देव जी की 550 वीं वर्षगांठ और राष्ट्रपिता की 150 वीं वर्षगांठ प्रमुख है। साथ ही हमने हमारे वार्षिक सांस्कृतिक समारोह जाइटगाइस्ट 2019 का पूरे जोश किंतु अनुशासन के साथ आयोजन किया।

भा.प्रौ.सं. रोपड़ समाज और राष्ट्र की आवश्यकताओं को जोड़ने वाले अनुसंधान में उत्कृष्टता के लिए प्रयास करता आ रहा है जिसके प्रमाण स्वरुप भारतीय सेना के साथ हमारे बढ़ते सहयोग और स्टबल बर्निंग, स्वास्थ्य, विनिर्माण, जल स्रोत आदि जैसी समस्या से संबंधित नवाचार से भी परिलक्षित होता है। विगत वर्ष के इन्हीं बेहतर अनुभवों के साथ हम वर्ष 2020 की ओर एक उत्कृष्ट वर्ष के रुप में देख रहे है जिसमें यह संस्थान राष्ट्र की सेवा में प्रतिबद्ध संस्थान के रुप में ओर अधिक ऊंचाईयों को प्राप्त करेगा।

आप सभी को नववर्ष की शुभकामनाएं.....।

भा.प्रौ.सं.रोपड़ का अष्टम दीक्षांत समारोह सम्पन्न

भा.प्रौ.सं.रोपड़ ने अपना अष्टम दीक्षांत समारोह अपने स्थायी परिसर में आयोजित किया। श्री एस. किरन कुमार, पूर्व अध्यक्ष, इसरो यह इस अष्टम दीक्षांत समारोह के मुख्य अतिथि थे। श्री एस. कीरन कुमार ने भारतीय अंतरीक्ष परियोजनाओं में महती भूमिका निभाई है। विद्यार्थी, अभिभावक तथा परिवारजन, पूर्व छात्र, संकाय और कर्मचारिगणों के समावेश के साथ 1500 से अधिक अतिथियों ने इस दीक्षांत समारोह में उपस्थिति दर्ज की। प्रो. सरित कुमार दास, निदेशक, भा.प्रौ.सं.रोपड़ ने संस्थान की उपलब्धियों को सभी के साथ साझा किया। इस दीक्षांत समारोह में विभिन्न श्रेणीयों के अंतर्गत विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया और इस वर्ष 240 विद्यार्थियों को उनकी उपाधियां प्रदान की गयी।

उपाधियां प्रद कुल विद्यार्थी : 240
प्रौद्योगिकी स्नातक पाठ्यक्रम : 113
विज्ञान निष्णात पाठ्यक्रम : 56
प्रौद्योगिकी निष्णात पाठ्यक्रम : 37
एम एस अनुसंधान पाठ्यक्रम : 6
पीएच.डी पाठ्यक्रम : 28

सुवीर कुमार, यांत्रिकी अभियांत्रिक विभाग ने इस वर्ष प्रौद्योगिकी स्नातक के स्नातक छात्रों के बीच भारत के राष्ट्रपति का स्वर्ण पदक प्राप्त किया। आदित्य गुप्ता, कंप्यूटर विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग को निदेशक स्वर्ण पदक प्रदान किया गया। संस्थान रजत पदक गौरव कामिला, प्रौद्योगिकी स्नातक, विद्युत अभियांत्रिकी विभाग, आदित्य गुप्ता, विद्युत अभियांत्रिकी विभाग, देबास्मिता मुखर्जी, प्रौद्योगिकी निष्णात, सीबीएमई, प्रतीक मुंजाल, कंप्यूटर विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग, अर्शदीप सिंह सन्धु, विद्युत अभियांत्रिकी विभाग, पुलक गुप्ता, थर्मल अभियांत्रिकी, रजत कुमार, विज्ञान निष्णात, रसायन, संदीप कुमार मिश्रा, विज्ञान निष्णात गणित और हिमांशु गौर, विज्ञान निष्णात, भौतिकी विभाग को प्रदान किया गया।

इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रो. सरित कुमार दास ने सभी विद्यार्थियों को संबोधित किया कि "आने वाले दिनों में , अपने भविष्य के हर एक कदम पर ईमानदारी, अखंडता तथा सत्यनिष्ठा के मूल्य को याद रखें। आपको भविष्य में इन मूल्यों के स्थान पर शीघ्र तात्कालिक प्राप्ति के लिए कई प्रलोभनों से होकर गुजरना पड़ेगा लेकिन आपको इन प्रलोभनों को अस्वीकार करने का साहस रखना होगा। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150 वर्षगांठ पर, हमें उस महान आत्मा के मूल्यों को नहीं भूलना चाहिएं जो 'सत्य की खोज' था। साथ ही आपको अपने परिवार, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रोपड़ और इस राष्ट्र के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को नहीं भूलना है।"

हिन्दी पत्रिका

श्रेणी (रैंकिंग)

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रोपड़ ने भारत में सभी भा.प्रौ.सं. के बीच प्रति शोधपत्र उद्धरण में उच्चतम के रुप में अनुसंधान गुणवत्ता में पुनः एक बार अग्रणी स्थान प्राप्त किया। यह सफलता संस्थान में चल रहे उच्च गुणवत्तायुक्त अनुसंधान का परिणाम है जो अपने मूल अनुसंधान क्षेत्रों के साथ साथ क्षेत्रीय और राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान के लिए अतरज्ञानानुशासनात्मक अनुसंधान पर बल देती है।

इसके साथ ही भा.प्रौ.सं.रोपड़ के लिए अंतरराष्ट्रीय श्रेणी में प्रथमतः प्रवेश प्राप्त करना एक संस्थान के रुप में एक मील का पत्थर है। भा.प्रौ.सं.रोपड़ ने टाइम्स हायर एज्युकेशन वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैकिंग 2020 में 301–350 श्रेणी में जो कि आईआईएससी बैंगलुरु का स्थान है उसे साझा किया है। हमारा अनुसंधान प्राप्तांक विगत 3 वर्षों में हमारी अनुसंधान एवं विकास में महत्वपूर्ण प्रगति को दर्शाता है। हमारी अनुसंधान गुणवत्ता और प्रभाव का पता प्रति शोध पत्र औसत उद्धरण से लगाया जा सकता है जो 13.99 पर है। चालु वर्ष के दौरान संस्थान के संकाय सदस्यों और शोधार्थियों ने उच्च प्रभावी अंतरराष्ट्रीय शोध–पत्रिकाओं में 305 शोध पत्रों को प्रकाशित किया हैं।

पीएच.डी शोधार्थियों की संख्या में प्रतिवर्ष वृद्धि हो रही है। इस वर्ष भी संख्या में हुई महत्वपूर्ण वृद्धि को देखा जा सकता है। जहां विगत वर्ष विद्यार्थियों की संख्या 389 थी जो 515 पहुंच गई है।

क्यूएस इंडिया यूनिवर्सिटी श्रेणी के द्वितीय संस्करण में 107 विश्वविद्यालय थे और श्रेणी आठ सूचकों पर आधारित थीः शैक्षिक प्रतिष्ठा, कर्मचारी प्रतिष्ठा, संकाय विद्यार्थी दर, पीएच.डी के साथ कर्मचारी, प्रति संकाय शोध पत्र, उद्धरण प्रति पेपर, अंतरराष्ट्रीय संकाय एवं विद्यार्थी।

गर्व का क्षणः क्रिक सदस्यों द्वारा निदेशक, भा.प्रौ.सं.रोपड़ का सम्मान

प्रो. अरुण ग्रोवल, पूर्व कुलपति, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़, प्रो. जगत राम, निदेशक, पीजीआईएमआर, चण्डीगढ़ के साथ क्रिक संस्थानों के अन्य सदस्यों के द्वारा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के निदेशक प्रो. सरित कुमार दास इन्हें विश्व विश्वविद्यालय श्रेणी 2020 में भा.प्रौ.सं.रोपड़ के सफल पदापर्ण हेतु सम्मानित किया गया।

उत्तर भारत को मिली अपनी प्रथम कोल्ड स्प्रे प्रयोगशाला – भा.प्रौ.सं.रोपड़ दृजेई सहयोग के साथ

भा.प्रौ.सं.रोपड़ ने जनरल इलैक्ट्रीकल कंपनी (जेई) के साथ सहयोग में योगशील विनिर्माण हेतु अत्याधुनिक राष्ट्रीय सुविधा को सफलतापूर्वक स्थापित किया है। यह प्रयोगशाला का संस्थान के यांत्रिकी अभियांत्रिकी विभाग में उच्च दाब कोल्ड–स्प्रे प्रौद्योगिकी के उपयोग के साथ पूर्णतः परिचालन किया जा रहा है। यह सुविधा उच्चतर आविष्कार योजना और एफआईएसटी –डीएसटी, भारत सरकार द्वारा प्राथमिक रुप से वित्त पोषित है। उर्जा प्रजनन, अंतरिक्ष, आटोमोबाईल, जैव–चिकित्सा, टैक्सटाईल और प्रक्रमण उद्यमों में कई उन्नत अनुप्रयोगों हेतु दुरुस्ती, नवीनीकरण और संघटक विनिर्माण के लिए 1000 सेल्सी. पर 50 बार से अधिक दाब को मुहय्या करने की यह कोल्ड स्प्रे प्रयोगशाला क्षमता रखती है। यह कोल्ड स्प्रे प्रयोगशाला पर्यावरण अनुकूल है।

संस्थान जेई के सहयोग में कई हितधारकों के बीच इस प्रौद्योगिकी को लोकप्रिय करने हेतु फरवरी 2020 में कोल्ड–स्प्रे अनुप्रयोगों पर कार्यशाला आयोजित करने जा रहा है। यह परियोजना भारत की राष्ट्रिरीय पहलों जैसे मेक इन इंडिया और स्कील इंडिया के साथ संलग्न है और देश में उन्नत विनिर्माण के आसपास के प्रयासों को बढ़ावा देने के साथ संरेखित करती है।

पुरस्कार एवं मान्यता

संस्थान के भौतिकी विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. मुकेश कुमारको यूएसआईईएफ द्वारा फुलब्राइट–नेहरु एकेडमिक एण्ड प्रोफेशनल एक्सीलेंस फैलोशिप 2020–2021 से सम्मानित किया गया।

श्री गुरु नानक देव जी के 550 वें प्रकाश पर्व उत्सव के आयोजन पर गुरु नानक स्टेडियम कपूरथला में आयोजित समारोह के दौरान पंजाब राज्य के माननीय मुख्यमंत्री श्री अमरिंदर सिंह जी द्वारा संस्थान के आद्योगिकी परामर्शी, प्रायोजित अनुसंधान और उद्योग संपर्क के अधिष्ठाता प्रो. हरप्रीत सिंह को उपलब्धि पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस समारोह में 400 से अधिक प्रख्यात पंजाबी महानुभावों को भी विभिन्न क्षेत्रों में उनके अद्वितीय योगदान हेतु सम्मानित किया गया।

प्रो. हरप्रीत सिंह ने वर्ष 2009 में भा.प्रौ.सं.रोपड़ के साथ प्राध्यापक के रुप में जुड़े है और वे तब से अब तक उच्च तापमान ओक्सीडेशन संक्षारण की रोकथाम हेतु विलेप संयोजन पर कार्य कर रहे है।

जाइट्गाइस्ट 2019

भा.प्रौ.सं. में संस्थान का तीन दिवसीय वार्षिक सांस्कृतिक महोत्सव जाइट्गाइस्ट का आयोजन किया गया। इस सांस्कृतिक महोत्स्व में लगभग 10 हजार विद्यार्थियों ने सहभागिता ली। जानेमाने गायक और अभिनेता दिलजीत दोसांज, भारत के उत्कृष्ट स्टैड–अप हास्य अभिनेता जाकिर खान, सुश्री रामा विद्यानाथन द्वारा भरतनाट्यम, भारतीय शास्त्रीय संगीत के बनारस घराने से पद्म भुषण राजन–साजन मिश्रा, ईडीएम डीजे आदि की प्रस्तुतियां जाइटगाइस्ट 2019 का विशेष आकर्षण का केंद्र रही। इसी श्रृंखला में फैशन शो "लश्कारा" का भी आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न महाविद्यालयों से सहभागिता देखने को मिली जहां विद्यार्थियों ने अपने फैशन कौशल और सर्जनात्मकता का बेहतरीन प्रदर्शन किया। रयत और बहरा महाविद्यालय से श्री अक्शप्रीत सिंह मिस्टर जाइटगाइस्ट और भा.प्रौ.सं.रोपड़ से सुश्री पंखुडी सक्सेना मिस जाइट्गाइस्ट रहीं।

भा.प्रौ.सं.रोपड़ में सतर्कता जागरुकता सप्ताह का आयोजन

भा.प्रौ.सं.रोपड़ में दिनांक 28 अक्तुबर 2019 से 02 नवंबर 2019 तक सतर्कता जागरुकता सप्ताह का आयोजन किया गया। इस अवसर का लाभ लेते हुए संस्थान के सभी संकाय सदस्य, कर्मचारिगणों ने प्रतिज्ञा तथा आन–लाईन प्रतिज्ञा ली। इस अवसर पर 31 अक्तुबर 2019 को श्री बलविंदर सिंह, सेवानिवृत्त उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। श्री सिंह ने दिवाला और दिवालियापनः कार्पोरेट प्रशासन पर प्रभाव विषय पर व्याख्यान दिया। इसी श्रृंखला में दिनांक 01 नवंबर 2019 को निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के संकाय सदस्यों, कर्मचारिगणों तथा विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता ली। विजेताओं को प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए गए।

संकाय की कलम से.....।

अभियंताओं हेतु प्रबंधन शिक्षा का महत्व

बीसवीं शताब्दी के मध्य तक व्यापार और उद्योग के सुचारु संचालन के लिए क्षेत्र–विशेष ज्ञान (Domain Knowledge) ही पर्याप्त माना जाता था ओर यह एक स्तर पर पर्याप्त था भी। किंतु बीसवीं शताब्दी के अंत तक आते–आते तकनीकी / प्रौद्योगिकी की क्रांति का आरंभ होता है, जिसमें प्रमुखता से मुख्य बिंदुओं पर चर्चा कर व्यापार और उसका प्रबंधन शिक्षा के साथ सहसंबंध पर विचार करना आवश्यक्त हो जाता है। यह महत्वपूर्ण बिंदू हैः–

इंटरनेट, वैश्वीकरण, ट्रेडनीति

प्रौद्योगिकीयों का आदान–प्रदान

बीसवीं शताब्दी के अंत तक आते–आते वैश्वीकरण ने पूरे समाज को एक स्थापन पर एकत्रित कर दिया। इंटरनेट जैसी तकनीकी क्रांति ने उद्यम और व्यापर को बहुत दूर तक प्रभावित किया। वैश्वीकरण ने पूरी दुनिया को एक गांव का स्वरुप दे दिया। और एक गाव का एक बाजार इस संकल्पना पर पूरी दुनिया का बाजार एक बाजार के रुप में सामने आया।

इसके परिमामस्वरुप हमारी ट्रेड नीति पूर्णतः बदल गई। प्रौद्योगिकी के आदान–प्रदान से सारी भौगोलिक सीमाएं समाप्ति की दिशा में थी। अब बाजार कोई एक बाजार न होकर एक विश्व बाजार हो गया। इस विश्व बाजार ने बाजार के बारे में हमारी परंपरागत सोच को और बाजार एवं व्यापार के आधारभूत तक्वों को बदलकर रख दिया। अब केवल क्षेत्र विशेष का ज्ञान व्यापार संचालन के लिए लिए अपर्याप्त लग रहा था।

वर्तमान में बाजार के इसी परिवर्तित स्वरुप के परिणामस्वरुप प्रबंधन शिक्षा (Management Education) अपनी नई संकल्पनाओं और चिंतन धारा के साथ विमर्श में आई। किंतु आज भी प्रबंधन शिक्षा किसी ठोस सिद्धांत और व्यवहार के स्तर पर एक स्वतंत्र ज्ञानानुशासन न होकर यह अर्थशास्त्र, वित्त, उत्पादन, मानव संसाधन आदि विषयों के साथ एक अंतरज्ञानानुशासनात्मक अध्ययन प्रणाली के रुप में हैं।

यह तो स्पष्ट है कि प्रबंधन शिक्षा अलग–अलग विषयों तथा अध्ययन–धाराओं का एक ऐसा पुंज है जो समग्र अन्विति करता है। अर्थात अगर आज के इस वैश्वीकरण के युग में यदि आपको अपना व्यापार का सुचारु रुप से संचालन करना है तो आपको प्रबंधन शिक्षा के अंतर्गत आनेवाले सभी विषयों को अलग–अलग तराजू में नहीं बल्कि एक ही तराजू में रखकर देखना और समझना होगा। साथ ही इन सभी विषयों के अंतःसंबंधों को समझकर अपने व्यापार का संचालन करना होगा।यह सभी विषय एक साथ मिलकर ही प्रबंधन शिक्षा की एक समग्र छवि (Macro Picture) का निर्माण करते है।

प्रबंधन शिक्षा का दूसरा महत्वपूर्ण बिंदू है लोक प्रबंधन कौशल (Man Management Skill)। यदि कोई व्यक्ति अभियंता के पद पर कार्यरत है तो यह स्पष्ट है कि उस व्यक्ति को अपने कार्यक्षेत्र का तकनीकी ज्ञान अवश्य ही है। किंतु यह तकनीकी ज्ञान लोक प्रबंधन कौशल के बिना एक पैर वाला ही सिद्ध होगा। क्योंकि इस व्यक्ति को इस कार्य के साथ जुडे सभी लोगों के साथ समन्वय स्थापित कर उस कार्य को पूर्णता की ओर ले जाना होता है। अतः लोक प्रबंधन कौशल की समझ और इसका अभ्यर्थी के भीतर विकास यह प्रबंधन शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है।

निर्णयन (Decision Making) यह प्रबंधन शिक्षा का एक और महत्वपूर्ण बिंदू है। प्रबंधन शिक्षा व्यक्ति के भीतर उसके विषय–क्षेत्र, कार्यक्षेत्र का तकनीकी ज्ञान एवं अभ्यास तथा लोक प्रबंधन कौशल का ही विकास नहीं करता अपितु कार्यक्षेत्र में, व्यापार संचालन में उचित निर्णय लेनी की क्षमता का भी विकास करता है।

डॉ. दीपांजन कुमार डे,
सहायक प्राध्यापक,
मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग,
भा.प्रौ.सं.रोपड़

हिंदी व्याख्यानमाला का आयोजन

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के हिंदी प्रकोष्ठ द्वारा दिनांक 18 अक्तुबर 2019 को एक दिवसीय हिंदी व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। हिंदी प्रकोष्ठ द्वारा यह प्रथम व्याख्यानमाला थी। इस अवसर पर जनसंचार और मीडिया के क्षेत्र के जानेमाने हस्ताक्षर श्री विनोद दुआ मुख्य वक्ता के रुप में उपस्थित थे। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रो. सरित कुमार दास, संस्थान के कुलसचिव श्री बी. नागराजन तथा अन्य गणमान्य वक्तियों के साथ उपस्थित थे। संस्थान के निदेशक प्रो. सरित कुमार दास ने इस प्रकार की व्याख्यानमाला आयोजित करने हेतु हिंदी प्रकोष्ठ को बधाई दी। अपने भाषण में प्रो. दास ने कहा कि हिंदी को यदि वर्तमान परिदृश्य में आगे बढ़ाना है को हमें क्लिष्टता से सरलता की ओर आना होगा। हम भाषा को चाहे वह हिंदी से इतर ही क्यों ना हो, हमें उन्हें सरलता के साथ आगे ले जाना होगा तभी हर एक नागरिक उस भाषा के साथ जुड़ेगा और उस भाषा की उन्नति में अपना भरपूर योगदान दे सकेगा।

श्री विनोद दुआ जी ने यह अभिभाषण में जनसंचार और मीडिया के बदलते स्वरुप पर एक विस्तृत व्याख्यान दिया। श्री दुआ जी ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों को भी सभी के समक्ष रखा। इसके पश्चात सभागार में उपस्थित संकाय सदस्य, कर्मचारिगण और विद्यार्थियों ने अपनी जिज्ञासाओं को श्री विनोद दुआ जी के समक्ष रखा जिसका श्री दुआ जी ने समाधान किया।

डॉ. ऋत कमल तिवारी द्वारा नराकास, रुपनगर की बैठक में व्याख्यान

दिनांक 23 अक्तुबर 2019 को नराकास, रुपनगर की अर्धवार्षिक बैठक में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के सिविल अभियांत्रिकी विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. ऋत कमल तिवारी ने जल स्रोत और जल संसाधन विषय पर विशेष आमंत्रित के रुप में व्याख्यान दिया। इस बैठक की अध्यक्षता श्री नरेन्द्र मेहरा, सहायक निदेशक, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, नई दिल्ली, श्री सुशील शर्मा, अध्यक्ष, नराकास, रुपनगर, तथा नराकास, रुपनगर के अंतर्गत आनेवाले सभी सदस्य कार्यालया/संस्थानों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। इस अवसर पर डॉ ऋत कमल तिवारी ने निकट भविष्य में आनेवाले जल संकट के उपायों को सभी के समक्ष रखते हुए जल स्रोत एवं जल संसाधन पर विस्तृत एवं गहन व्याख्यान दिया।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अक्तुबर–दिसंबर 2019 की त्रैमासिक बैठक संस्थान के निदेशक एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष प्रो. सरित कुमार दास की अध्यक्षता में दिनांक 12.12.2019 को संपन्न हुई। इस बैठक में संस्थान के राजभाषा कार्यों को बढ़ावा देने हेतु कई बिंदुओं पर चर्चा की गई।

प्रो. सरित कुमार दास, निदेशक महोदय ने हिंदी प्रकोष्ठ द्वारा किए जा रहे सभी कार्यों का जायजा लिया और आवश्यक दिशा–निर्देशों दिए।

भाषाएं

कुछ बुद्धिमान लोगों के बीच में बातें चर्चा हो रही थी। इनमें से कुछ अंग्रेजी में हँसी–ठिठोली कर रहे थे तो कुछ हिन्दी में। कुछ ऐसे भी थे जिन्हें अंग्रेजी का 'ा' तक नहीं आता थो तो कुछ दक्षिण से आए मित्रगण थे जिन्हें हिन्दी का ज्ञान नहीं था। किंतु मजेदार बात यह थी कि हँसी–ठिठोली किसी भी भाषा में चल रही हो, भले ही समझ में न आए फिर भी एक दूसरे को हँसते देख सभी हँस लेते थे। इनमें से कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्हें दोनों भाषाओं का ज्ञान था। उन सभी में से एक मैं भी था।

इस छोटे से ४ मीटर के दायरे में बैठे ५ से ८ लोग अलग अलग प्रांत से होने के बावजूद कहीं ऐसा प्रतीत नहीं होने देते थे कि इन सब के शरीर अलग–अलग राज्यों के मिट्टी से जन्में हैं। बेशक भाषाओं की अड़चने जरूर थी पर शायद ये अड़चने ठिठोलियों की खिलखिलाहट में दब गई थी।

जहां पर यह सब चल रहा था वहीं मेरे मन में एक विचार आया कि– वह ग्यारवीं कक्षा का विज्ञान में दाखिला लेने वाला पहला दिन, जबकि दाखिला मिल जाने से ज्यादा यह चिंता थी कि विज्ञान विषय की पढ़ाई अंग्रेजी माध्यम में होगी।

क्या हम अंग्रेजी में उत्तर पुस्तिका में उत्तर लिख पाएंगे? क्या हम उन लोगों के बराबर पहुँच पाएँगे, जो पहले १० सालों से अंग्रेजी माध्यम में ही अध्ययन करते आ रहे हैं?

यह सब प्रश्न मन में ही रह गए लेकिन दाखिला मिल गया, अब किताबें भी खरीद ली गई जिसमें एक अक्षर भी हिन्दी में नहीं था। यही किताबें अपने साथ आए हिन्दी माध्यम के मित्रों को दिखाकर हँसा करते और न जाने मन ही मन में ऐसा पूछ रहे हो कि क्या तुम और हम इससे पढ़ाई कर पाएंगे? हमारा आत्मविश्वास तो तब और बैठ जाता जब कोई छात्र अंग्रेजी में अध्यापक से कुछ प्रश्न पूछता था।

उन छात्रों को देख मेरे मन में भी विचार आता था कि मैं भी पूरी कक्षा में खड़ा होकर कह पाता "mam can you repeat it, I didn't understand" न जाने क्यूँ छह शब्दों के एक वाक्य को बोलने में हमें सालों लग गए? शायद आत्मविशवास न था, और ऐसा भी लगता था कि अगर ना बोल पाए तो क्लास में बैठी लड़कियों के सामने बेइज्जती ना हो जाए, पर शायद तब किताबों के अलावा जिंदगी की इस लंबी दौड़ का ज्ञान नहीं था। जो हम यह समझ पाते कि भाषाएँ कभी बेइज्जती का कारण नहीं बनती, बल्कि बेइज्जती का कारण हमारी यही सोच होती है, जो हमें बार–बार यह सोचने पर मजबूर करती है कि तुम कुछ कर नहीं पाए तो तुम बेइज्जत हो जाओगे। खैर ये सब होता रहा और छमाही की परीक्षाएँ आ गई एवं परीक्षाएँ दे दी गई। अब वक्त था परिणामों का, कक्षा में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन हिन्दी माध्यम से आए हुए बच्चों का ही था और उनमें से भी सर्वश्रेष्ठ मेरा था। मेरे मन के अंदर प्रश्नों का सैलाब उमड़ पड़ा कि– मैं क्या सोच रहा था और क्या हुआ? पता चला, भूतकाल में जो हुआ है उससे कुछ फर्क नहीं पड़ता अगर वर्तमान नहीं सुधारा तो जरूर तुम्हारा भविष्यकाल एक बुरा भूतकाल बन जाएगा। अब अंग्रेजी सीखने की ललक और बढ़ चुकी थी बारहवी पास करते करते हम बस अंग्रेजी को सुनकर समझना हीं सीखे थे और हमारा आत्मविश्वास बढ़ने लगा था। अंग्रेजी को थोड़ा–थोड़ा बोलने की कसर भी स्नातक में आकर पूरी हो गई।

अब कुछ छह साल बीत चुके हैं, मैं अब स्नातकोत्तर तक पहुँच गया हूँ और अब वह समय आ गया है, जब हम कुछ अंग्रेजी भाषी लोगों को हिन्दी में किए गए ठिठोलियों का अंग्रेजी अनुवाद करके देने में सक्षम हैं।

धैर्य एक अपने आप से ऐसा संघर्ष है, जो आपको अपने आप से लड़ना सिखाता है।

प्रशांत यादव
2019पीएचएस1034
एम.एससी. (भौतिकी)
भा.प्रौ.सं.रोपड़

सब ही सुख चाहते

छोड़ के दूसरों को, खुद में अगर देखते,
दिखता एक जैसे हैं सब, सब ही सुख चाहते।

जरूरतें हैं सभी की सभी से अलग, बराबर सभी को ना बेशक मिले,
मगर धरती पे हक है सबका बराबर, सभी को बराबर का ये हक मिले,
सबके हिस्से का कुछ ही ने रखा चुरा के,
नहीं तो अमीरी है सब के ही वास्ते।

खून से लाल इतिहास के बाद भी, बात छोटी सी क्यों कोई समझता नहीं,
बड़ा नासमझ है आदमी, आदमी को भला आदमी क्यों समझता नहीं,
लड़ते आए हैं कब से, जाने कब तक लड़ेंगे,
इरादे हो जाएं अब ठीक, जो पहले न नेक थे।

धर्म के नाम पे हैं व्यवसाय कईं, मान्यताओं का विस्तार जिनसे हुआ,
सुख है क्या जानने के लिए छोड़ दो, मान्यताएं दुखी संसार जिनसे हुआ,
सुखी होगे तब ही खुद को समझोगे जब,
व्यर्थ का पुस्तक, पत्थर या कुछ भी पूजते।

अजय सिंह रेदू
(2017MEZ0027)
पीएच.डी. शोधार्थी,
यांत्रिकी अभियांत्रिकी विभाग,
भा.प्रौ.सं.रोपड़

मैं, तुम, और बनारस

उनकी खामोशी और उनके गीत,
उनकी ललक और उनके रीत,
सब कुछ बनारस जैसा है।

उनकी बातें और उसमें मिठास,
उनकी यादें और उसमें प्यास,
उनकी हँसी और उनका साथ,
मेरा हाथ उनका हाथ,
सब कुछ बनारस जैसा है।

सुबह–शाम और दिन–रात,
अच्छी और बकवास बात,
उनकी जुल्फें और अंदाज,
थोड़ा आडंबर थोड़ा रिवाज,
सब कुछ बनारस जैसा है।

थोड़ी नफरत भरपूर प्यार,
हर दिन एक नया त्योहार,
उनकी आँखें और अस्सी घाट,
उनका गुस्सा और उनकी ठाठ,
सब कुछ बनारस जैसा है।

उनका तजुर्बा और उनका अल्हड़पन,
उनकी मस्ती और उनका फक्कड़पन,
झूठी बातें और भौकाल,
उनकी भक्ति और महाकाल,
सब कुछ बनारस जैसा है।

उनकी जिद और उनका जुनून,
थोड़ा झगड़ा ज्यादा सकून,
मेरा प्यार और तेरा प्यार,
मानो चौरासी घाट और गंगा जलधार,
सब कुछ बनारस जैसा है।

बस यहाँ कुछ बनारस जैसा नहीं है,
ये तो शहर है,
जो दिन रात भागता है,
मानो यहाँ बदलता नहीं प्रहर है।

यहाँ सिर्फ दोपहर और रात होती है,
सब व्यस्त हैं यहाँ,
कोई रुकता नहीं यहाँ किसी के लिए,
और ना हीं किसी की किसी से मुलाकात होती है।

राकेश कुमार "पंकज"
(शोधार्थी, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग,
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रोपड़, पंजाब – 140001)
मोबाइल संख्या – 91– 7607915761

मन कितना बावरा है

कभी सोचता है उड़ चलूँ,
कभी कहता है ठहर जाऊँ,
इसका कोई ठिकाना नहीं,
मन कितना बावरा है।

इसका कोई काया नहीं,
ना हीं इसकी छाया है,
हम में तुम में सब में है,
ये मन कितना बावरा है।

खुशी के पल में ठहाके लगाता,
गम में साथ रहता है,
दुनिया भर की सैर करता,
ये मन कितना बावरा है।

इन्द्रधनुष के जैसे रंग हैं इसके,
अनगिनत आशाएँ हैं,
इसकी कोई भाषा नहीं,
ये मन कितना बावरा है।

कमल राज प्रवीण
(2018CSM1013)
प्रौद्योगिकी निष्णात,
कंप्यूटर विज्ञान एवं अभि. विभाग,
भा.प्रौ.सं. रोपड़

संस्थान के बगीचे का दृश्य।

नवनियुक्त कर्मचारिगण

श्री अर्पित गुप्ता
कनिष्ठ प्रयोगशाला सहायक
सिविल अभियांत्रिकी

सुश्री हंसप्रीत कौर
कनिष्ठ प्रयोगशाला सहायक
रसायन

श्री सरबजीत सिंह
कनिष्ठ प्रयोगशाला सहायक
यांत्रिकी अभियांत्रिकी

श्री आशीष गौर
कनिष्ठ सहायक

सुश्री साक्षी कपूर
कनिष्ठ सहायक

श्री सुमीत राणा
कनिष्ठ सहायक

श्री.पंकज कुमार
कनिष्ठ प्रयोगशाला सहायक
सू.प्रौ.अनुभाग

श्री हरमीत सिंह ढिल्लोन
कनिष्ठ प्रयोगशाला सहायक
सीबीएमई

प्रो. नरेश राखा
वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी
सीबीएमई

श्री अनिल कुमार
कनिष्ठ प्रयोगशाला सहायक
कंप्यू. वि. एवं अभि.

सुश्री सनप्रीत कौर सैनी
कनिष्ठ सहायक

सुश्री भावना भाटिया
कनिष्ठ सहायक

सुश्री मनदीप कौर
कनिष्ठ सहायक

श्री जसदीप सिंह
कनिष्ठ सहायक

श्री रिषभ सेमवाल
कनिष्ठ प्रयोगशाला सहायक
रासायनिक अभियांत्रिकी

श्री राज कुमार मीणा
कनिष्ठ प्रयोगशाला सहायक
सिविल अभियांत्रिकी

सुश्री सानू उस्मानी
कनिष्ठ सहायक

सुश्री परविंदर कौर
कनिष्ठ सहायक

सुश्री जसप्रीत कौर
कनिष्ठ सहायक

श्री संदीप सिंह
कनिष्ठ सहायक

श्री अक्शप्रीत सिंह तम्बर
कनिष्ठ सहायक

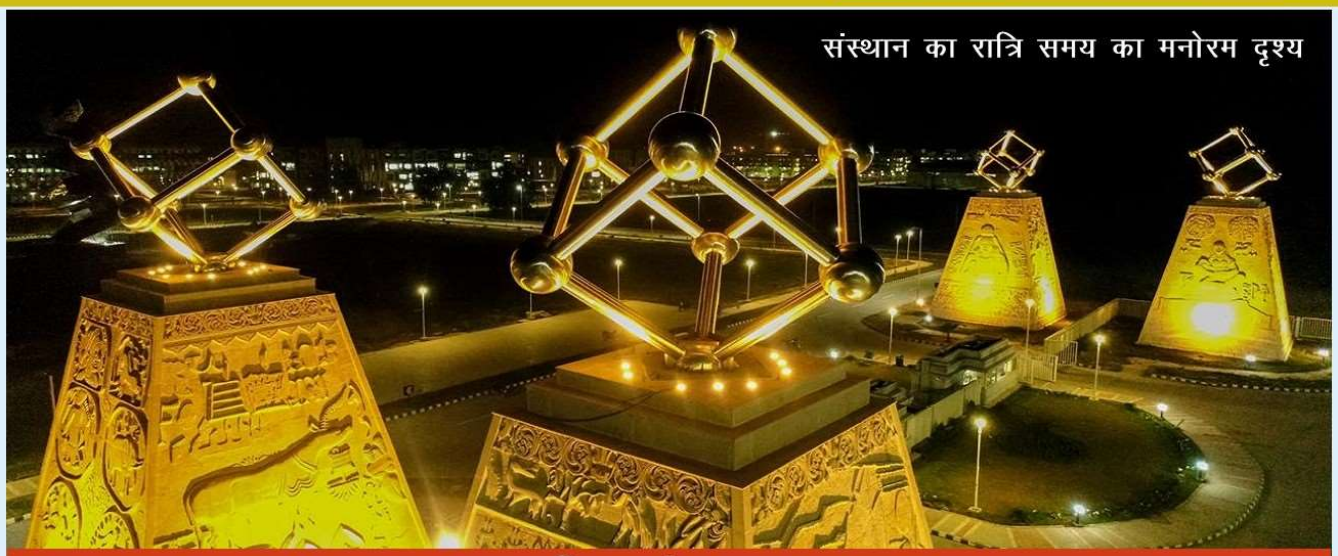

नवनियुक्त संकाय सदस्य

डॉ. आदित्य सिंह राजपूत
सहायक प्राध्यापक
सिविल अभि.

डॉ. इक्वांशु सोनकर
सहायक प्राध्यापक
सिविल अभि.

डॉ. बालेश कुमार
सहायक प्राध्यापक
गणित

डॉ. प्रिंस कुमार सिंह
सहायक प्राध्यापक
धातु. एवं पदा. अभि.

डॉ. अथर्वा पोंडरिक
सहायक प्राध्यापक
सीबीएमई

डॉ. राजागोपाल वैल्लींगिरी
सहायक प्राध्यापक (संविदा पर)
रासायनिक अभि.

पदोन्नति हेतु अभिनंदन

हिंदी प्रकोष्ठ, भा.प्रौ.सं.रोपड़ श्री आशीष उनियाल, वरि. प्रयोगशाला सहायक, श्री रुपींदर सिंह मुंद्रा, वरि. प्रयोगशाला सहायक, यांत्रिकी अभि., श्री आशु कौशिक, तकनीकी अधीक्षक, कंप्यू.वि. एवं अभि., श्री अमीत कुमार, तकनीकी अधीक्षक, यांत्रिकी अभि., श्री मानवेंदर सिंह, वरि. प्रयोगशाला सहायक, सू.प्रौ. अनुभाग, श्री सुखविंदर सिंह, वरि. प्रयोगशाला सहायक यांत्रिकी अभि. तथा श्री करन सिंह, कनि. प्रयोगशाला सहायक, निर्माण प्रबंधन समूह का पदोन्नति हेतु अभिनंदन करता है।

संरक्षक संपादक
प्रो. सरित कुमार दास
निदेशक, भा.प्रौ.सं.रोपड़

परामर्शदाता संपादक
डॉ. अरविंद कुमार गुप्ता
संकाय प्रभारी (हिंदी)
श्री लगवीश कुमार
हिंदी अधिकारी तथा उपकुलसचिव,
भा.प्रौ.सं.रोपड़

संपादक
डॉ. गिरीश प्रमोदराव कठाणे
कनि. हिंदी अनुवादक,
भा.प्रौ.सं.रोपड़

अभिकल्प, प्रकाशन एवं मुद्रण
सुश्री प्रीतेंदर कौर
जनसंपर्क अधिकारी, भा.प्रौ.सं.रोपड़

संपादन सहयोग
श्री ऋतभ किशोर
छात्र समन्वयक (संगम पत्रिका),
पीएच.डी शोधार्थी, यांत्रिकी अभि. विभाग,
भा.प्रौ.सं.रोपड़